आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

दैनिक समाचार–पत्र

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 8 • अंक-2268 • उदयपुर, बुधवार 10 मार्च, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

समाचार–जगत्
सकारात्मक व जनहितार्थ खबरें

प्लूटो सौरमंडल का ग्रह नहीं

प्लूटो, कभी हमारे सौरमंडल का ग्रह माना जाता था। ग्रह के तौर पर 70 वर्षों तक ये लिस्ट में शामिल भी रहा, लेकिन फिर 2006 में इससे ये खिताब वापस ले लिया गया। क्या आप जानते हैं क्यों? प्लूटो को इस ग्रहों की लिस्ट से बाहर करने या रखने को लेकर 24 अगस्त 2006 को दुनिया के करीब ढाई हजार खगोलविदों के बीच घंटों मंथन हुआ था।

इस मंथन के बाद इस पर मतदान किया गया। इसमें इसको ग्रह न मानने वाले अधिक थे। इसलिए इसको ग्रहों की लिस्ट से बाहर कर दिया गया। आपको बता दें कि इस ग्रह की खोज सबसे पहले 18 फरवरी 1930 को खगोलशास्त्री क्लाइड डब्ल्यू टॉमबॉ ने अमेरिका में एरिजोना की लोवेल ऑब्जरवेटरी में की थी।

वैज्ञानिकों को लगता था कि प्लूटो सूर्य की उस तरह से परिक्रमा नहीं करता है जैसे अन्य ग्रह करते हैं। ये कभी सूरज के बेहद करीब होता था तो कभी बेहद दूर होता था। इसकी परिक्रमा करने वाली कक्षा भी एक समान नहीं थी। दूर से देखने में इसकी और नैप्च्यून की कक्षा एक दूसरे को काटती हुई दिखाई देती थी। हालांकि ऐसा नहीं था। बेहद छोटा होने की वजह से इसको बौना ग्रह कहा जाता था। वैज्ञानिकों को नैप्च्यून की कक्षा के इर्द–गिर्द घेरे में कई चीजें ऐसी मिलीं जो प्लूटो की ही तरह थी।

2004 और इसके बाद इसी घेरे में वैज्ञानिकों को हउमेया और माकेमाके और इस घेरे से बाहर एरिस मिला, जो प्लूटो से बड़ा था। ये ग्रह प्लूटो से काफी मेल खाते थे। इसलिए वैज्ञानिकों को लगा कि इसको ग्रह कहना सही नहीं है। 13 सितंबर 2006 को इस संघ ने प्लूटो को ग्रह की सूची से बाहर करने का एलान किया। हालांकि कुछ वैज्ञानिकों का ये भी कहना था कि ग्रहों की परिभाषा को दोबारा गढ़ने की जरूरत है। लेकिन यदि ऐसा होता तो कई खगोलीय पिंड भी ग्रह बन सकते थे। लिहाजा इसको खगोलीय वस्तु माना गया।

सेवा–जगत्
सेवा पथ पर आपका नारायण सेवा संस्थान

नारायण सेवा का अखिल भारतीय शाखा सम्मेलन सम्पन्न

नारायण सेवा संस्थान के लियो का गुड़ा स्थित परिसर में अखिल भारतीय शाखा सम्मेलन में दिव्यांग एवं निर्धनजन की सेवा को और अधिक गति देने का निर्णय किया गया। संस्थापक पद्मश्री कैलाश जी 'मानव' ने सम्मेलन का उदघाटन करते हुए कहा कि कोरोना महामारी के पैर पसारने के साथ ही गरीब एवं मध्यम वर्ग की परेशानियां बढ़ गई हैं। ऐसे में जरूरतमंद के हर घर तक संस्थान सहायक रूप में पहुंचे, इसके प्रयत्न होने चाहिए।

सम्मेलन के विशिष्ट अतिथि सतपाल जी मंगला– कैथल, धर्मपाल जी गर्ग– नरवाना, कांतिलाल जी मुथा–पाली, दास बृजेन्द्र जी–हाथरस, प्रमोद जी लोहिया –अहमदाबाद, महेश जी वर्मा– रांची, ठाकुर दास जी –दिल्ली, कमल चंद जी लोढ़ा– मुंबई व एम बी जी कपूर– अम्बाला थे।

प्रारंभ में संस्थान निदेशक वंदना जी अग्रवाल ने देशभर से आए शाखा संयोजकों व प्रेरकों का स्वागत किया। अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल ने संस्थान की 36 वर्षों की सेवा यात्रा का जिक्र करते हुए कहा कि जो दूसरों के दुःख में रोता है और मदद करता है, उसी का जीवन सार्थक है।

सम्मेलन में अखिल भारतीय सेवा कार्यों को लेकर डॉक्यूमेंट्री का भी प्रदर्शन किया गया। कार्यक्रम में दिल्ली, पाली, हाथरस, मुंबई ,कैथल, नरवाना शाखाओं को अपने क्षेत्र में कोरोना काल में श्रेष्ठ सेवाओं के लिए कोरोना योद्धा सम्मान प्रदान किया गया।

समूह प्रभारी पलक जी अग्रवाल ने कोरोना के चरम दौर में उदयपुर के शहरी व आदिवासी इलाकों तथा अन्य शहरों में 50 हजार लोगों तक राशन पहुंचाने के अभियान की जानकारी दी। सम्मेलन के सांयकालीन सत्र में हाँगकाँग शाखा के अध्यक्ष रमेश जी सावरथिया ने भी संबोधित किया। सम्मेलन को संस्थान के ट्रस्टी जगदीश जी आर्य, देवेंद्र जी चौबीसा ने सम्बोधित करते हुए सेवा कार्यों की विस्तृत प्रायोजनाओं पर प्रकाश डाला। संचालन महिम जी जैन और ऐश्वर्य जी त्रिवेदी ने किया।

गुजरात में पुरातत्व नगरी

गुजरात के महेसाणा के वडनगर में पुरातत्व विभाग की खुदाई के दौरान दूसरी सदी के अवशेष मिले हैं। इसमें दो हजार वर्ष पुराना 12 से 14 मीटर लंबा किला, दीवार व मकान के अवशेष मिले हैं।

इसके अलावा शंख की कलात्मक चूड़ियां, चांदी, तांबा–पीतल के सिक्के, मिट्टी के बर्तन भी मिले हैं। अब तक यहां सैकड़ों वर्ष पुरानी चीजें व आवासीय अवशेष मिल चुके हैं। 50 मीटर परकोटे की खुदाई हो चुकी है। अभी 200 मीटर परकोटे की खुदाई–सफाई चल रही है।

इस क्षेत्र से एक हजार वर्ष पुराने अवशेष भी मिले हैं। जानकारों का मानना है कि यहां कोई सभ्यता विकसित हुई होगी। वैसे वड़नगर हड़प्पा सभ्यता के पुरातत्व स्थलों में से एक है। पुरातत्ववेत्ताओं का यह भी मानना है कि 16वीं सदी में जब पश्चिमी देशों से लोग भारत आए तो वड़नगर की संपदा का इस्तेमाल करने लगे। अंग्रेजों ने भी यहां पर रेल की पटरियां बिछाई थी।

संस्थान द्वारा दिव्यांग दम्पती व बच्चे की मदद

नारायण सेवा संस्थान ने दिव्यांग धर्माराम (13) और रमेश मीणा (28) को उनकी विपरीत परिस्थितियों में तात्कालिक मदद पहुँचाई है। एक सप्ताह पहले कानोड़ तहसील जिला उदयपुर (राज.) के तालाब फलां निवासी रमेश पुत्र वाला मीणा का घर आग लगने से स्वाह हो गया था। संस्थान ने अनाज, वस्त्र, कम्बल मसाले आदि देकर उसकी मदद की। रमेश और उसकी पत्नी लोगरी दोनों ही जन्मजात दिव्यांग है। चार बच्चों के साथ गृहस्थी को चलाना, पहले से ही इसके लिए भारी था और अब घर के जल जाने से उस पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा है। वहीं मंगलवार को पीआरओ विपुल शर्मा को फुटपाथ पर मिले धर्मा पुत्र कंवरलाल को व्हीलचेयर, कपड़े, बिस्किट एवं राशन देने के साथ उसका सीपी टेस्ट करवाया। इस बालक की दो वर्ष पूर्व बीमारी के दौरान आवाज और आंखों की रोशनी चली गई थी। अब इसके पांव भी नाकाम हो गए है। डॉक्टर्स टीम आवश्यक चिकित्सा के लिए प्रयासरत हैं।

संस्थान निदेशक वंदना जी अग्रवाल ने कहा कि विषमता में परेशान दिव्यांगों एवं दुखियों को ज्यादा से ज्यादा मदद पहुंचाने के लिए संस्थान तत्पर है। इस अवसर पर विष्णु जी शर्मा हितैषी, भगवान प्रसाद जी गौड़, दिलीप सिंह जी, फतेहलाल जी मौजूद रहे।

किसके लिए, गुब्बारे लिए?

डॉ. रवि अपनी क्लीनिक के लिए गाड़ी स्टार्ट ही करने वाले थे कि मोहल्ले के ही दूसरे सिरे पर रहने वाले कुपोषण के मारे जर्जर और तेजहीन मैले– कुचैले धर्मदास ने दरवाजे के सामने 'गुब्बारे– गुब्बारे' की आवाज लगाई।

रवि ने गाड़ी से उतर कर, धर्मदास से अपने एक वर्ष के बेटे के लिए गुब्बारे खरीदे। डॉ. रवि गुब्बारे को लेकर घर में घुसे, तो घुसते ही पत्नी ने पूछा, क्यों जी ! अभी तो ध्रुव जानता भी नहीं है कि गुब्बारा क्या होता है, फिर उसके लिए इकट्ठे चार गुब्बारे क्यों ले आए?

लाना ही था तो एक ही लाते, वही काफी था। रवि ने उत्तर दिया, 'ये गुब्बारे तुम्हारे ध्रुव के लिए नहीं, धर्मदास के लिये खरीदे हैं। वे एक गुब्बारा तीन रुपये में बेच रहे थे। मैंनें दस रुपये के माँगे, तो उन्होंने इतने दे दिए। बेचारे ने हमें दो रुपये का फायदा भी करा दिया।'

पत्नी ने तर्क दिया, 'मुझे आपकी कोई भी बात समझ में नहीं आ रही है।' तुम्हारी समझ में कैसे आएंगी।

तुम एक डॉक्टर की पत्नी और एक बड़े बाप की बेटी जो हो।

मेरी बात तो बूढ़े धर्मदास की समझ में आएगी, जिसकी सारी संपत्ति उसके शातिर बड़े भाई ने छीन ली और वह बेचारा दिनभर कभी गुब्बारे, तो कभी मूँगफलियाँ बेचकर, मुश्किल से शाम को अपना अकेले पेट भर पाता है, रवि ने तर्क दिया।

पदकों से झोली भरी, अब तमन्ना आगे जाने की

बिलासपुर की अंजली पटेल ने दो साल पहले कैटलीना चैनल पैरा स्वीमिंग में भाग लिया। पिछले साल भी उन्हें नार्थ जोन इंग्लैंड से ऑफर मिला लेकिन इसमें लगने वाले खर्च की वजह से नहीं जा सकी। कैटलीना चैनल के वक्त भी अंजली ने 5 लाख रुपए कर्ज लिए थे। डेटा ऑपरेटर अंजली की तनख्वाह इतनी नहीं कि पारिवारिक जिम्मेदारियों के अलावा खेल में खर्च करें।

अंजली छत्तीसगढ़ की नंबर वन और देश में दूसरे रैंक की पैरा तैराक है। विभिन्न राष्ट्रीय– अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धाओं में उन्होंने 17 स्वर्ण, 20 रजत और 12 कास्य पदक अपने नाम कर छत्तीसगढ़ का नाम रोशन किया है।

बचपन में पोलियो, तालाब में सीखा तैरना : तीन साल की उम्र में बायां पैर पोलियोग्रस्त हो गया। पिता ड्राइवर थे। उन्हें ननिहाल कोटमीसुनार भेज दिया। वह वहीं पली–बढ़ी और गांव के तालाब में खेल–खेल में तैरना सीख गई। 12वीं के बाद वह प्रतियोगिताओं में भाग लेने लगीं। इलाहाबाद स्थित जमुनाजी मे नेशनल खेला, जहां कांस्य पदक मिला। इससे आत्मविश्वास बढ़ गया। इसके बाद सिलसिला चल निकला।

एकाग्रता से सफलता

जब स्वामी विवेकानंद जर्मनी में थे, तब वे एक दिन संस्कृत के विद्वान प्रोफेसर पॉल डायसन के घर पर रुके हुए थे। दोनों बातचीत कर रहे थे। उस समय प्रो. डायसन को किसी काम से बाहर जाना पड़ा।

स्वामीजी खाली बैठे थे तो उन्हें वहीं रखी हुई किताब दिखी। उन्होंने किताब को उठाया और पढ़ने लगे। वह कविताओं की किताब थी। पढ़ते–पढ़ते विवेकानंदजी इतने डूब गए कि उन्हें पता ही नहीं चला कि प्रो. डायसन वापस आ गए हैं।

प्रो. डायसन को ये बात अच्छी नहीं लगी। उन्होंने सोचा कि विवेकानंद जानबूझकर मुझे नजरअंदाज कर रहे हैं। थोड़ी देर बाद जब स्वामीजी ने अपना सिर उठाया तो उन्होंने प्रोफेसर को देखा तो माफी मांगी और कहा, 'मैं ये किताब पढ़ने में इतना खो गया कि मैं आपकी ओर ध्यान ही नहीं दे सका।'

डायसन अभी भी नाराज ही थे। वे बोले, 'मुझे ऐसा लगता है कि आपने जानबूझकर मुझे नजरअंदाज किया है। क्या कोई किताब पढ़ने में भी इतना खो सकता है कि उसे कुछ ध्यान ही न रहे।'

यह बात सुनकर विवेकानंदजी ने किताब की कुछ कविताएं वैसी की वैसी पढ़कर सुना दीं, जैसी कि किताब में लिखी थीं। किताब में 200 कविताएं थीं, लेकिन डायसन को अभी विश्वास नहीं हुआ, उन्होंने कहा, लगता है आप पहले भी इस किताब को पढ़ चुके हैं।

विवेकानंदजी ने कहा, 'मैंने यह किताब पहली बार ही पढ़ी है। आप जहां से चाहे, वहां से कोई भी कविता पूछ सकते हैं।'

थोड़ी देर बाद प्रो. डायसन मान गए कि स्वामीजी की याददाश्त बहुत तेज है। उन्होंने पूछा, 'यह बताइए आपको इतनी कविताएं याद कैसे हो गईं?'

विवेकानंद बोले, 'एकाग्रता की वजह से मुझे ये कविताएं याद हो गईं। मैं जब भी कोई काम करता हूं, खासतौर पर पढ़ने और लिखने का तो पूरी एकाग्रता के साथ करता हूं। एकाग्रता जितनी गहरी होगी, स्मृति उतनी तेज हो जाएगी। इसीलिए मैंने पूरी एकाग्रता के साथ पढ़ी हुई इस किताब की कविताएं आपको सुना दीं।

देशभर में नारायण सेवा संस्थान की शाखाएं

जबलपुर
आर. के. तिवारी,मो. 9826648133
मकान नं. 133, गली नं. 2, समदड़िया ग्रीन सिटी,माधोताल, जिला - जबलपुर (म.प्र.)

कोरबा
श्री देवनाथ साहू,मो. 09229429407
गांव- बेला कछार, मु.पो. बालको नगर, जिला-कोरबा (छ.ग.)

मुम्बई
श्री कमलचन्द लोढ़ा,मो. 08080083655
दुकान नं 660, आर्किडसिटी सेन्टर,द्वितीय मंजिल, बेस्ट डिपो के पास, बेलासिस रोड, मुम्बई सेन्ट्रल (ईस्ट) 400008

जुलाना मण्डी
श्रीराम निवास जिन्दल,
श्री मनोज जिन्दल मो. 9813707878,108 अनाज मण्डी, जुलाना,जींद (हरियाणा)

मुम्बई
श्रीमती रानी दुलानी,न.-028847991
9029643708,10-बी/बी, वाईसराय पार्क,ठाकुर विलेज कान्दीवली,मुम्बई

शाहदरा शाखा
विशाल अरोड़ा-8447154011
श्रीमान रविशंकर जी अरोड़ा-9810774473
मैसर्स शालीमार ड्राइक्लीनर्स
IV/1461 गली नं. 2 शालीमार पार्क, D.C.B. ऑफिस के पास,शाहदरा,ईस्ट दिल्ली

हापुड़ (उ.प्र.)
श्री मनोज कंसल मो.-09927001112,
डिलाइट टैन्ट हाऊस,कबाड़ी बाजार,हापुड़

भीलवाड़ा
श्री शिव नारायण अग्रवाल,मो. 09829769960
C/o नीलकण्ठ पेपर स्टोर, L.N.T. रोड़, भीलवाड़ा-311001 (राज.)

अम्बाला केन्ट
श्री मुकुट बिहारी कपूर ,मो. 08929930548
मकान नं.- 3791, ओल्ड सब्जी मण्डी, अम्बाला कंन्ट, अम्बाला केन्ट-133001(हरियाणा)

जयपुर
श्री नन्द किशोर बत्रा,मो. 09828242497
5-C, उन्नति एन्क्लेव, शिवपुरी, कालवाड़ रोड़, झोटवाड़ा, जयपुर 302012 (राजस्थान)

अजमेर
सत्य नारायण कुमावत
मो. 9166190962,कुमावत कॉलोनी, आर्य समाज के पीछे, मदनगंज,किशनगढ़, जिला अजमेर (राज.)

पाली/जोधपुर
श्री कान्तिलाल मूथा,मो. 07014349307
31, गुलजार चौक, पाली मारवाड़ (राज.)

कैथल
डॉ. विवेक गर्ग,मो. 9996990807,गर्ग मनोरोग एवं दांतों का हस्पताल के अन्दर पद्मा मॉल के सामने करनाल रोड़, कैथल

रतलाम
चन्द्र पाल गुप्ता
मो. 9752492233,मकान नं. 344, काटजूनगर, रतलाम (म.प्र.)

सिरसा, हरियाणा
श्री सतीश मेहता मो. 9728300055
म.न.-705, से.-20,पार्ट-द्वितीय,सिरसा, हरि.

नांदेड़ (सेवा प्रेरक)
श्री विनोद लिंबा राठोड,07719966739
जय भवानी पेट्रोलियम,मु. पो. सारखानी, किनवट, जिला - नांदेड़, महाराष्ट्र

पाचोरा (महाराष्ट्र)
श्री सीताराम जी-मो. 9422775375

मन्दसौर
मनोहर सिंह देवड़ा
मो. 9758310864,म.नं. 153, वार्ड नं. 6, ग्राम-गुराड़िया,पोस्ट-गुराड़ियादेदा, जिला - मन्दसौर (मध्यप्रदेश)

डोडा
श्री विक्रम सिंह व नीलम जी कोतवाल
मो. 09419175813, 08082024587
ग्वाड़ी, उदराना, त. भद्रवा, डोडा (ज.क.)

चुरु
श्री गोरधन शर्मा,मो. 09694218084,गाँव व पोस्ट - झोंथड़ा, त. तारानगर, चुरू-331304 (राज.)

भोपाल
श्री विष्णु शरण सक्सेना,मो. 09425050136
A-3/302, विष्णु हाईटेक सिटी, अहमदपुर रेल्वे क्रोसिंग के सामने, बावड़िया कलाँ, होशंगाबाद रोड़ जिला - भोपाल (म.प्र.)

बहरोड़
डॉ. अरविन्द गोस्वामी,मो. 9887488363
'गोस्वामी सदन' पुराने हॉस्पीटल के सामने बहरोड़, अलवर (राज.)
श्री भुवनेश रोहिल्ला,मो. 8952859514,
लेडिज फैशन पॉईन्ट, न्यू बस स्टैण्ड के सामने यादव धर्मशाला के पास, बहरोड़, अलवर (राज.)

नई दिल्ली
श्री आदेश गुप्ता, मो.9810094875, 9899810905
मकान नं. : ए-141, लोक विहार, पितमपुरा, नॉर्थ वेस्ट दिल्ली

आकोला
हरिश जी, मो.नं. - 9422939767
आकोट मोटर स्टेण्ड, आकोला (महाराष्ट्र)

पलवल
वीर सिंह चौहान मो.9991500251
विला नं. 228, ओमेक्स सिटी, सेक्टर-14, पलवल (हरि.)

बरैली
कुंवरपाल सिंह पुंढीर
मो. 9458681074,विकास पब्लिक स्कूल के पीछे, स्वरूप नगर (चहवाई) जिला - बरैली- (उ.प्र.)

हजारीबाग
श्री डूंगरमल जैन,मो.-09113733141
C/o पारस फूड्स, अखण्ड ज्योति ज्ञान केन्द्र, मेन रोड़ सदर थाना गली, हजारीबाग (झारखण्ड)

परभणी (महाराष्ट्र)
श्रीमती मंजु दरड़ा-मो. 09422876343

खरसिया
श्री बजरंग बंसल,मो.-09329817446
शान्ति ड्रेसेज, नियर चन्दन तालाब शनि मन्दिर के पास,खरसिया (छ.ग.)

जम्मू
श्री जगदीश राज गुप्ता,मो.-09419200395
गुरू आशीर्वाद कुटीर, 52-सी अपर शिव शक्ति नगर जम्मु-180001

नरवाना(हरियाणा)
श्री धर्मपाल गर्ग,मो.-09466442702,
श्री राजेन्द्र पाल गर्ग मो.-9728941014
165-हाऊसिंग बोर्ड कॉलोनी नरवाना,जीन्द

फरीदाबाद
श्री नवल किशोर गुप्ता मो. 09873722657
कश्मीर स्टेशनरी स्टोर, दुकान नं. 1डी/12, एन.आई.टी., फरीदाबाद, हरियाणा

सुमेरपुर (राज.)
श्री गणेश मल विश्वकर्मा,मो. 09549503282
अंचल फाउण्डरी, स्टेशन रोड़, सुमेरपुर, पाली

बूंदी
श्री गिरिधर गोपाल गुप्ता,मो. 9829960811,
ए.14, 'गिरधर-धाम', न्यू मानसरोवर कॉलोनी चित्तौड़ रोड़, बून्दी (राज.)

कैथल
श्री सतपाल मंगला,मो. 09812003662-3
68-ए, नई अनाज मंडी, कैथल

बिलासपुर
डॉ. योगेश गुप्ता,मो.-09827954009
श्रीमन्दिर के पास, रिंग रोड़ नं. 2, शान्ति नगर, बिलासपुर (छ.ग.)

बालोद
बाबूलाल संजय कुमार
जैन मो. 9425525000,रामदेव चौक बालोद, जिला-बालोद (छ.ग.)

मथुरा
श्री दिलीप जी वर्मा
मो. 08899366480
1, द्वारिकापुरी,कंकाली, मथुरा (उ.प्र.)

धनबाद(झारखण्ड)
श्री भगवानदास गुप्ता-09234894171
07677373093 गांव-नापो खुर्द,पो.-गोसाई बलिया,जिला-हजारीबाग (झारखण्ड)

मुम्बई
श्री प्रेम सागर गुप्ता ,मो. 9323101733
सी-5, राजविला, बी.पी.एस. 2 क्रोस रोड़,वेस्ट मुलुंड, मुम्बई

बरैली
विजय नारायण शुक्ला
मो. 7060909449,मकान नं.22/10, सी.बी.गंज, लेबर इण्डस्टीयल कॉलोनी बरैली (उ.प्र.)

दीपका, कोरबा (छ.ग.)
श्री सूरजमल अग्रवाल,मो. 09425536801

हाथरस (उ.प्र.)
श्री दास बृजेन्द्र,मो.-09720890047
दीनकुटी सत्संग भवन,सादाबाद

अलवर
श्री आर.एस. वर्मा,मो.-09024749075,
के.वी. पब्लिक स्कूल,
35 लादिया,बाग अलवर (राज.)

हमीरपुर
श्री ज्ञानचन्द शर्मा,मो. 09418419030
गाँव व पोस्ट - बिधरी, त. बदसर
जिला हमीरपुर - 176040 (हिमाचलप्रदेश)

हमीरपुर
श्री रसील सिंह मनकोटिया ,मो. 09418061161
जामलीधाम, पोस्ट-रोपा, जिला-हमीरपुर-177001

झारखण्ड
श्री जोगिन्दर सिंह जग्गी,मो. 7992262641,
44ए, छोटकी मुरीम, नजदीक उमा इन्सीट्यूट
राजीव सिनेमा रोड़, बिजुलिया, रामगढ़ (झारखण्ड)

सम्पादकीय

गंतव्य और मंतव्य दोनों बराबर हो तो व्यक्ति की सफलता निश्चित होती है। सामान्यतः अनेक लोगों को अपना गंतव्य भी ज्ञात नहीं होता। जाना है पर जाना कहाँ है? चलते सभी हैं किन्तु कहाँ तक चलना है, पर गंभीरतापूर्वक कोई विचार नहीं करता। जीवन भर चलते रहने के बाद भी आदमी कहीं न पहुँचे और जहाँ पहुँचे वह गंतव्य ही न हो तो यह जीवन की सबसे बड़ी दुर्घटना ही है।

और यदि गंतव्य का ज्ञान भी हो और मंतव्य न हो तो? तो कोई भी व्यक्ति कैसे जायेगा। जब इच्छाशक्ति ही न हो तो इच्छा की पूर्ति कैसे होगी? मंतव्य यदि सही हो तो व्यक्ति सकारात्मक होता है। मंतव्य यदि स्पष्ट न हो तो भावात्मक अस्थिरता को होना ही है। मंतव्य ही व्यक्ति में चेतना, उत्साह और सफलता के भावों का संचारण करता है। यदि मंतव्य न हो तो समर्थ व्यक्ति भी सफल नहीं हो सकेगा क्योंकि वह किसी भी कार्य को पूर्ण मनोयोग से नहीं करेगा। अतः मंतव्य और गंतव्य दोनों स्पष्ट होने ही चाहिये।

कुछ काव्यमय

मंतव्य यदि सच्चा होगा तो,
दूर नहीं होगा गंतव्य।
मिले सफलता दैनंदिन फिर
उज्ज्वल होगा भवितव्य।
इच्छाशक्ति ही हम सबको,
ऊर्जावान् बनाती है।
सद्इच्छा ही हमको
मंजिल तक ले जाती है।

- वरदीचन्द राव, अतिथि सम्पादक

घिसट घिसट कर संस्थान में आया लौटते वक्त अपने पैरों पर खड़ा था

सहारनपुर (उत्तर प्रदेश) जिले के गांव भाबसी निवासी श्री धर्मवीर सिंह के पुत्र अर्पित जन्म से ही एक पांव में घुटनों से नीचे तक दिव्यांग था। गरीबी के कारण न उसका इलाज हो सका और न ही उसे पढ़ने के से भेजा जा सका। माता– पिता बच्चे की इस हालत और उसके भविष्य को लेकर सदैव चिंतित रहते। घर का माहौल हर समय उदासी से भरा रहता था। धर्मवीर बताते हैं एक दिन उन्हें किसी परिचित में नारायण सेवा संस्थान में दिव्यांगों की निःशुल्क चिकित्सा, कृत्रिम अंक लगाने और सहायक उपकरण दिये जाने की जानकारी दी। उसके बाद वे बेटे को लेकर उदयपुर आए और संस्थान के डॉक्टर से मिले जिन्होंने दिलासा देते हुए कहा कि आप बेटे को गोद में उठा कर लाए है किंतु वह अपने पांव पर खड़ा होकर चलते हुए अपने घर में प्रवेश करेगा। कुछ दिनों के इलाज के बाद उसे विशेष कैलीपर पहनाया गया। अर्पित जब पिता के साथ पुनः अपने घर के लिए रवाना हुआ तब यह संस्थान के अस्पताल से चलते हुए ही बाहर निकला। पिता ने कहा मुझे बहुत अच्छा लग रहा है। अब इसके लिए मैं वो सब– कुछ करूंगा जिसका सपना देखा करता था।

अपनों से अपनी बात

राजा की सीख

एक राज्य का राजा बहुत दयालु था। वह प्रतिदिन सुबह टहलने जाता था। उसे द्वार पर जो भी पहला याचक मिलता था वह उसे उसकी मनचाही वस्तु दान में देता था। यह सुनकर एक लोभी व्यक्ति एक दिन सुबह होते ही राजा के द्वार पर जाकर खड़ा हो गया। जैसे ही राजा ने द्वार पर याचक को देखा तो पूछा हे– बंधुवर! आपको क्या चाहिए? लालची व्यक्ति ने नाटकीय ढ़ंग से कहा राजन, आप जो भी देंगे वह मुझे स्वीकार होगा। तब राजा ने कहा– नहीं आप कुछ बताएंगे तभी मैं दे पाऊंगा।

वह विचार में पड़ गया। उसने राजा से कहा– मुझे सोचने का समय दीजिये। मैं कुछ विचार कर बाद में माग लूगा। राजा ने सहमति प्रदान कर दी। उसने मन ही मन सोचा कि मैं एक याचक हूँ और वह एक राजा । क्यों न पूरा राज– पाट ही मांग लूँ। जिससे फिर जीवन में कभी मांगने की जरूरत ही ना पड़े। राजा जब टहलकर वापस आए और व्यक्ति से पूछा तो उसने शीघ्रता से पूरा पूरा राज– पाट मांग लिया।

राजा ने उससे कहा– हे प्रियवर! आपने तो मेरी पीड़ा दूर कर दी। आपने मुझे भार– हीन बना दिया। इस राजकाज की वजह से न तो मैं ढ़ंग से खा पाता हूँ और न ही सो पाता हूँ। इसने तो मेरा संपूर्ण सुख– चैन ही छिन लिया। इसके कारण मुझे भगवान की भक्ति का भी समय नहीं मिलता है। जिसने मुझे मानव देह के रूप में जन्म लेने का अवसर दिया। हर क्षण मुझे प्रजा की चिंता को आपने पलभर में दूर कर दिया।

मैं आपका बहुत आभारी हूँ और रहूँगा। यह सुनकर लोभी की आँखे खुल गई। उसे राजा की महानता का अनुभव हुआ तथा उसे अपनी ही सोच पर पछतावा हुआ कि राजा होते हुए भी इसे राजपाट का कोई मोह नहीं है जबकि मैं मोह– माया में पड़ गया। वह राजा को प्रणाम कर वहां से चला गया।

– कैलाश 'मानव'

न पालें गलतफहमी

किसी शहर में एक जौहरी की मृत्यु के उपरांत उसका परिवार संकट में पड़ गया। घर में खाने के लाले पड़ गए। एक दिन जौहरी की पत्नी ने अपने बेटे को अपना हीरों का हार देकर कहा–"बेटा, इसे अपने चाचा की दुकान पर ले जाओ और इसे बेचकर कुछ रुपए ले आओ।" बेटा हार लेकर दुकान पर गया।

चाचा ने हार बहुत देर तक अच्छी तरह से जाँचा–परखा और लड़के से कहा – "बेटा, माँ से जाकर कहना कि अभी बाजार जरा मंदा है, थोड़ा रुककर बेचना अच्छा दाम मिलेगा।" उस लड़के को कुछ रुपये देकर अगले दिन से दुकान पर काम करने आने के लिए कह दिया।

लड़का अब रोज दुकान पर जाने लगा और हीरों और रत्नों की परख का काम भी सीखने लगा। समय बीता और वह हीरों व रत्नों का अच्छा पारखी बन गया। दूर–दूर से लोग उसके पास अपने रत्नों की जाँच करवाने आने लगे।

एक दिन उसके चाचा ने उससे कहा –बेटा, अपनी माँ से वह हीरों का हार लेकर आना, अब बाजार में तेजी आ गई है, अच्छे दाम मिल जाएँगे। उसने घर जाकर अपनी माँ से वह हार माँगा और घर पर ही हार को परखा तो पाया कि हार तो नकली था।

वह दुकान पर खाली हाथ लौट आया तो चाचा ने पूछा– बेटा, हार नहीं लाए क्या? तब लड़के ने जवाब दिया– वह तो नकली था।

इस पर चाचा बोले जब तुम पहली बार वह हार लेकर आए थे, तब अगर मैं उस हार को नकली बता देता तो तुम यही सोचते कि आज हमारे ऊपर जब बुरा वक्त आया तो चाचा हमारी असली वस्तु को भी नकली बता रहे हैं, परंतु आज तुम्हें खुद पता चल गया कि वह हार नकली है।

सही व सच्चे ज्ञान के अभाव में मानव किसी भी वस्तु को गलत ही समझेगा और यही गलतफहमी रिश्तों में दूरियाँ ला देती है।

–सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

फिल्म बनाने वाला भी दुःखी था, उसने अपनी योग्यता एवं प्रतिभा का भरपूर उपयोग कर श्रेष्ठ परिणाम देने की कोशिश की थी। दीपावली के दिन इस फिल्म बनाने वाले का कैलाश के पास फोन आया। कैलाश अब तक इस फिल्म को एक हादसा मान भूल चुका था। उसने उससे अच्छी तरह बात की और दीपावली की शुभ कामनाओं का आदान प्रदान किया।

फिल्म निर्माता ने एक बार फिर अपनी फिल्म के पसन्द नहीं आने हेतु अफसोस प्रकट किया और कैलाश से पूछा– आप टी.वी. चैनलो पर प्रवचन क्यूं नहीं देते ? कैलाश को उसकी बात सुन कर हंसी आ गई , वह बोला – मैं क्या कोई साधु –संत हूँ जो प्रवचन दूंगा और अगर दूं भी तो ऐसा कौन सा चैनल है तो मेरे जैसे व्यक्ति का प्रवचन चलायेगा।

फिल्म बनाने वाले ने कहा– साधु – संत होना जरूरी नहीं है, आप सेवा का अच्छा कार्य कर रहे हो, जो बात फिल्म के माध्यम से लोगों को बताना चाहते थे वह टी. वी. चैनलों के जरिये बता सकते हैं।

कैलाश को टी.वी. चैनलों की शक्ति का पूर्ण एहसास था, वह यही सोचता था कि यह अत्यन्त दुर्लभ और व्ययसाध्य माध्यम है इसलिये इस दिशा में उसने कभी प्रयत्न ही नहीं किया था।

वह यह सब सोच रहा था तभी उधर से फोन पर आवाज आई– मैं आपको एक फोन नं. देता हूँ , आप इस पर बात करके देखे, कुछ होता है तो आपकी संस्था का भला ही हो जायेगा।

कैलाश ने फोन नं. ले लिया, अगले दिन इस नम्बर पर फोन मिलाया तो पता चला कि यह आस्था चैनल से जुड़े किसी व्यक्ति का मोबाइल न. है। कैलाश आस्था चैनल देखता था, इस पर निरन्तर धार्मिक कार्यक्रम आते थे। यह पता चलते ही कि यह नम्बर आस्था वालों का है, उसके मन में लड्डू फूटने लगे।

वह सोचने लगा कि यदि इस चैनल पर उसे कुछ समय मिल जाये तो नारायण सेवा के कार्यो का दूर दूर तक प्रचार हो सकता है। इस चैनल का दर्शक वर्ग यही था, जिस तक पहुँचना कैलाश का लक्ष्य था। **अंश-202**

बच्चों का खानपान सुधारें

खान–पान को लेकर बच्चों के पास अपनी एक सूची होती है जिसमें उनकी पसंद–नापसंद का ब्योरा होता है। बचपन की ये जिंद्द बाद में उनकी आदत में शुमार हो जाती है और फिर वे हमेशा ही नापसंद चीजों से दूर रहते हैं। इसके लिए कुछ तरीके अपनाकर और छोटी–छोटी बातों का ध्यान रख आप उनकी इन आदतों में तब्दीली ला सकते हैं।

न हो कुछ अलग

बच्चे यदि भोजन के मामले में बदले नखरे करते है और गिनी–चुनी चीजें ही खाते हैं तो उनके लिए कुछ अलग न बनाएं। कुछ अलग बनाकर हर बार परोसते रहेंगे तो उन्हें इसकी आदत हो जाएगी।

पकाने में मदद

लड़का हो या लड़की, दोनों को खाना पकाने की प्रक्रिया में शामिल करें। इससे उन्हें इस बात का भान रहेगा कि जिसे में पलभर में नकार देते हैं वह कितनी मेहनत का कार्य है।

करें नया प्रयोग

यदि बच्चे किसी व्यंजन को लेकर नखरे करते हैं तो नकारात्मक प्रतिक्रिया न दें। डांटना और जबरदस्ती खिलाना हल नहीं। व्यंजन को लेकर नया एक्सपेरिमेंट कर सकते हैं।

भोजन एक साथ

इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखें कि घर में खाना सभी के लिए एक जैसा बनें। जो बना है वही सबको खाना है वह भी साथ बैठकर। किसी के लिए अलग से व्यंजन न बनाएं।

अनुभव अमृतम्

कभी चंगेज खान आ गये। मोहम्मद गौरी आ गया। पृथ्वीराज की आँखें ले ली गई, और आँखें लेने के बाद भी चंदबरदाई ने कहा था।

चार बांस चौबीस गज,
अंगुल अष्ट प्रमाण,
तां ऊपर सुल्तान है
मत चूके चौहान।

पृथ्वीराज ने शब्द भेदी बाण से मोहम्मद गौरी को समाप्त किया। चंदबरदाई ने अपनी कटार को पृथ्वीराज जी के सीने में घोंपी। ये यवनों से नहीं मरना चाहते हैं। मरेंगे हम। चार सौ, पांच सौ यवन है चारों तरफ। हम जिन्दा नहीं बच सकते। चंदबरदाई ने अपनी कटार पृथ्वीराज जी को घोपी। पृथ्वीराज जी ने अपनी कटार चंदबरदाई के सीने में घोंपी। दोनों अमर हो गये लेकिन मोहम्मद गौरी भी मारा गया–लाला, बाबू।

बन्धु ये अनाहत चक्र हृदय का, ये मणीपुर चक्र नाभि, ये स्वाधिष्ठान चक्र, मूलाधार चक्र शास्त्रों में मिलते हैं। सहस्रार में मिलेंगे तो रोज अमृत बरसेगा। आपके कर्मो में, आपकी पवित्रता में, आपकी बातों में, आपकी अपनी नारायण सेवा संस्थान के कामों में दिव्यांगों की सेवा में, रोगियों के घावों पर मरहम हमको लगाना है। सच्ची सेवा प्रभु पूजा है उत्तम यज्ञविधान है, दरिद्र नारायण बनकर आता कृपा सिन्धु भगवान है।

सेवा मन की शांति, सेवा धरम का सार।
सेवा करने वाले का, होता निज उद्धार।।
सेवा ईश्वरीय उपहार– 82 (कैलाश 'मानव')

राहुल को लगे कृत्रिम पैर

शाहदरा– दिल्ली निवासी एवं संस्थाान के विशिष्ट सेवा प्रेरक श्री रविशंकर जी अरोड़ा ने लॉकडाउन (कोरानाकाल) के दौरान दोनों पावों से दिव्यांग एक युवक के कृत्रिम पैर लगवाए।

दिल्ली के बदरापुर निवासी युवा क्रिकेट खिलाड़ी 2018 में जबलपुर मैच खेलने गए थे। लोटते समय चलती ट्रेन से नीचे गिर पडे और पांव पहियों के नीचे आकर कट गए थे। राहुल को अब चले फिरने में किसी सहारे की जरूरत नहीं है। उन्होंने संस्थान एवं व उसके विशिष्ट सेवा प्रेरक अरोड़ा जी का आभार व्यक्त किया है।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति (वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)	
नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि	
1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें
मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999
आपके अपने संस्थान का पता
नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

'मन के जीते जीत सदा' दैनिक समाचार-पत्र अब ऑनलाईन साईट पर भी उपलब्ध है
www.narayanseva.org, www.mannkijeet.com
: kailashmanav

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) 313002
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
• सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. RAJHIN/2014/59353 • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023